कथा सरिता

भगवान और किसान

एक गांव में किशनलाल नाम का एक किसान रहता था। उसकी जीविका पूरी तरह खेती पर ही निर्भर थी। कभी बाढ़ आ जाती, कभी सूखा पड़ जाता, कभी धूप बहुत तेज हो जाती तो कभी ओले पड़ जाते! हर बार किसी न किसी कारण से किशनलाल की फसल को नुकसान हो जाता। एक दिन दु:खी होकर किशन ने भगवान से कहा, प्रभु, आप अंतर्यामी हैं। लेकिन लगता है आपको खेती की ज्यादा जानकारी नहीं है, इसलिए हम किसानों को नुकसान सहन करना पड़ता है। आपसे एक प्रार्थना है कि एक साल मुझे अवसर देकर देखें। जैसा मैं कहूँ वैसा मौसम कर दें, फिर देखना मैं किस तरह अन्न के भण्डार भर देता हूँ! भगवान बोले, ठीक है, जैसा तुम कहोगे वैसा ही मौसम कर दूंगा, मैं बिल्कुल भी दखल नहीं दूंगा! किशन ने गेहूँ की फसल बोई। जब उसने धूप चाही तो धूप मिली, जब पानी, तब पानी मिला! तेज धूप, ओले, बाढ़, आंधी तो उसने भगवान से चाही ही नहीं। समय के साथ फसल बढ़ी। किशन खेत में लहलहाती भरपूर फसल को देख फूला नहीं समाता था। उसने जीवन में ऐसी फसल नहीं देखी थी। वह मन ही मन सोचता, अब भगवान को पता चलेगा कि खेती कैसे की जाती है। वे बेकार ही अब तक हम किसानों को परेशान कर हे थे। जब फसल काटने का समय आया तो किशन बड़े गर्व से फसल काटने खेत पर गया। जैसे ही वह फसल काटने लगा, सिर पकड़कर बैठ गया! गेहूँ की एक भी बाली के अन्दर दाने नहीं थे। सारी बालियां अंदर से खाली थीं। किशनलाल ने दु:खी मन से भगवान से कहा, प्रभु यह क्या हुआ? भगवान ने जवाब दिया, यह तो होना ही था। तुमने पौधों को हर अनुकूल परिस्थिति उपलब्ध करवाई लेकिन उन्हें विपरीत परिस्थितियों से सामना करने का जरा सा भी मौका नहीं दिया। उन्हें ना तेज धूप में तपने दिया, ना आंधी ओलों से जूझने दिया, इसीलिए सब पौधे खोखले रह गए। जब आंधी आती है, तेज बारिश और ओले गिरते हैं तब पौधे स्वयं को बचाने के लिए संघर्ष करते हैं। इस संघर्ष से बल पैदा होता है। यह बल उन्हें शक्ति और उर्जा देता है। उनकी जीवटता को उभारता है। जिस तरह सोने को कुंदन बनाने के लिए उसे आग में तपाना, गलाना, हथौड़ी से पीटना पड़ता है तभी उसकी स्वर्णिम आभा उभरती है। कई चुनौतियों से गुजरने के बाद ही वह अनमोल बनता है। यही फसल के साथ होता है। व्यक्ति के साथ भी ऐसा ही है।

इतना सुनने के बाद किसान किशनलाल ने हाथ जोड़कर कहा, प्रभु, आप की बराबरी करने चला था। मुझे माफ करें। आपकी बात मैं समझ गया। किशनलाल ने फिर कभी भगवान से कोई शिकायत नहीं की।

बड़ा कौन - सुंदरता या प्रतिभा

चंद्रगुप्त मौर्य का महामंत्री चाणक्य प्रतिभावान तो था, लेकिन बदसूरत भी था। एक बार चंद्रगुप्त ने उससे मजाक किया, महामंत्री जी, कितना अच्छा होता कि आप प्रतिभावान होने के साथ-साथ सुंदर भी होते! प्रत्युत्तर चाणक्य के स्थान पर महारानी ने दिया। बोली, महाराज, रूप तो मात्र मृगतृष्णा है। वस्तुत: किसी भी व्यक्ति का सम्मान उसके रूप के कारण नहीं, बल्कि उसकी प्रतिभा के कारण ही किया जाता है। महारानी आप तो रूप की प्रतिमूर्ति हैं। क्या कोई ऐसा उदाहरण है, जो यह सिद्ध करता हो कि गुण के आगे रूप का कोई महत्व नहीं है? चंद्रगुप्त ने पूछा। इस बार चाणक्य बोला, महाराज! आप एक की बात करते हैं, ऐसे तो अनेक उदाहरण हैं। लीजिए, आप पहले शीतल जल पीजिए। चाणक्य ने चंद्रगुप्त की ओर दो ग्लास बढ़ा दिए। हर उसने पूछा, महाराज! आपको कौन-से ग्लास का पानी अच्छा लगा? पहले ग्लास में स्वर्ण कलश का पानी था और दूसरे ग्लास में मिट्टी से निर्मित मटके का। चंद्रगुप्त बोला, मुझे तो मिट्टी से निर्मित मटके का पानी शीतल व सुस्वादु लगा। उसे पीने से मैं तृप्त हो गया। लेकिन, स्वर्ण कलश का पानी पीने योग्य भी नहीं था। लेकिन, विवशता थी कि मुझे पहले वही पानी पीने को दिया गया। अत: न चाहते हुए भी मुझे पीना पड़ा। महारानी ने मुस्कुराते हुए कहा, महाराज! प्रधानमंत्री ने बुद्धि कौशल से आपके प्रश्न का उत्तर दे दिया है। स्वर्ण निर्मित कलश दिखने में तो सुंदर लगता है, लेकिन उसका जल पीने योग्य नहीं होता। दूसरी ओर, मिट्टी से बना मटका दिखने में भले सुंदर न लगे, लेकिन उसका पानी शीतल व सुस्वादु होता है। अब आप ही निर्णय करें कि सुंदरता व प्रतिभा में से कौन बड़ा है?

संत के धैर्य की परीक्षा

संत रामदास अपने कुछ शिष्यों के साथ भ्रमण करते हुए समरपुर गांव में पहुंचे। समरपुर गांव के लोग संत रामदास का बहुत आदर करते थे। रामदास एवं उनके शिष्यों का ग्रामीणों ने बहुत ही आदर-सत्कार किया और फिर उनके पवित्र वचन सुनने के लिए उनके आस-पास एकत्रित हो गए। रामदास लोगों को धर्म और आचरण की बातें सरल भाषा में समझाने लगे। लोग भावविभोर होकर उनको सुन रहे थे। तभी वहां एक व्यक्ति आया और अचानक खड़ा होकर रामदास को अपशब्द कहने लगा। उपस्थित भक्तों ने उसे रोकने का बहुत प्रयास किया, पर वह नहीं माना और लगातार रामदास को बुरा-भला कहता रहा। लोगों ने कहा - महाराज! यह व्यक्ति कितना उद्दंड है, निरर्थक ही आपको भला-बुरा कह रहा है। संत रामदास उस व्यक्ति के इस आचरण पर जरा भी क्रोधित नहीं हुए और लोगों से बोले - यही व्यक्ति भविष्य में मेरा सबसे बड़ा भक्त बनने वाला है।

लोगों ने पूछा - महाराज कैसे? रामदास ने कहा - कोई कुम्हार के यहां घड़ा लेने जाता है तो घड़े को बजाकर देखता है कि वह फूटा हुआ तो नहीं है। जब 10-20 रुपए के घड़े की कोई इतनी परख कर सकता है तो भला जिसे गुरु मानना है उसे दस-बीस गालियां दिए बिना कैसे पहचानेगा? पहले वह परीक्षा लेगा कि गुरु में आक्रोश व धैर्य का भाव कितना है। यह जानने के बाद ही तो वह गुरु को अपनाएगा, इसलिए यह व्यक्ति मुझे निरर्थक ही अपशब्द नहीं कह रहा है। गुरु की गुरुता तभी स्वीकारी जाती है, जबकि उसमें सदाचरण के सभी लक्षण मौजूद हों। रामदास को अपशब्द कहने वाला व्यक्ति वास्तव में आगे चलकर उनका सबसे बड़ा भक्त बना।

सुख-समृद्धि की योजना डूबी क्यों ?

एक बार, एक मौलवी जी को एक नदी पार करनी थी। उनके साथ दो बच्चे और पत्नी भी थी। मौलवी साहिब ने अपनी लाठी लेकर और नदी के बीच में जाकर पानी की गहराई को नापा और फिर अन्य दो-तीन स्थानों पर भी पानी की गहराई को नापा। फिर कुल जोड़ निकालकर औसत निकाली। उसके बाद कहने लगा कि डर की कोई बात नहीं है, औसत ठीक है, कोई डूबेगा नहीं। सो, वह सबको लेकर बेखटके जल में उतरने लगा। थोड़ा आगे बढ़ने पर गले तक पानी चढ़ आया और बच्चे डूब गए। दूसरे किनारे पर जाकर मौलवी साहिब ने जब यह देखा कि बच्चे तो शायद डूब गए हैं तो उन्हें हैरानी हुई कि हिसाब में कहीं भूल तो नहीं रह गई। उन्होंने फिर से उसको दुहराया तो पाया कि हिसाब तो ठीक है। तब तो मौलवी साहब बड़े असमंजस में पड़ गए और उनके मुख से निकल पड़ा कि 'हिसाब ज्यों का त्यों, कुम्बा डूबा क्यों?'

इसी प्रकार, आज बड़े-बड़े योजनाधिकारी भी योजनाएं बनाते रहते हैं कि इस साल इतने एकड़ भूमि में अनाज बोयेंगे, अमुक विधि से खेती करेंगे, एक एकड़ भूमि में इतने क्विंटल अनाज की पैदावार होगी, देश की जनसंख्या तब तक अमुक संख्या तक पहुंच चुकेगी, हरएक नागरिक के हिस्से में इतने किलो तक अनाज आयेगा, पहले से तो हरएक व्यक्ति के अनाज की मात्रा में वृद्धि होगी ही। परन्तु प्राकृतिक आपदायें उनकी सारी कागजी योजनाओं को गुड़-गोबर कर देती हैं। कहीं अनावृष्टि के कारण अकाल पड़ जाता है तो कहीं अतिवृष्टि के कारण बाढ़ आ जाती है। कहीं बांध का पानी अपनी मर्यादा को तोड़कर बाहर फूट पड़ता है तो कहीं टिड्डी दल हरी-भरी खड़ी फसल को क्षण-भर में चाटकर चौपट कर देता है और योजना बनाने वाले सोचते ही रह जाते हैं कि हिसाब ज्यों-का-त्यों, सुख-समृद्धि की योजना डूबी क्यों? इन सभी आपदाओं का कारण यह है कि मनुष्य के कर्म, धर्म से युक्त नहीं हैं क्योंकि धर्म ही तारने वाला है और अधर्म डूबोने वाला है। धर्म न होने के कारण प्राकृतिक आपदायें आती ही हैं।

आध्यात्मिकता द्वारा सुरक्षा

संयुक्त राष्ट्र द्वारा घोषित सड़क सुरक्षा दशक के अंतर्गत यातायात एवं परिवहन प्रभाग द्वारा ''आध्यात्मिकता द्वारा सुरक्षा'' विषय पर एक नवीनतम् सेवा प्रोजेक्ट का शुभारंभ किया गया है। इस प्रोजेक्ट की सेवाओं में आप सहभागी बनें और परमात्मा की आशाओं को साकार करें। आज परिवहन के क्षेत्र में अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है जैसे कि कम समय पर मंजिल पर पहुंचना, ट्रैफिक जाम के दौरान मानसिक तनाव का होना आदि..आदि। यदि हम सड़क परिवहन के क्षेत्र में 'सुरक्षित यात्रा' की चाह रखते हैं तो हमें जीवन में आध्यात्मिकता को अपनाना ही होगा।

इस प्रोजेक्ट से सम्बन्धित जानकारी के लिए सम्पर्क करें फोन: 022-28704370 ई मेल: ttwoffice@gmail.com, Website: www.wheelsforpeace.org

लाजपत नगर, दिल्ली। 'रक्षा-सूत्र' बांधने के पश्चात् समूह चित्र में हैं भारतीय जनता पार्टी के वरिष्ठ नेता लालकृष्ण आडवानी, ब्र.कु.सपना बहन तथा अन्य।

नरवत्राणा, कच्छ। डेप्यूटी कलेक्टर डी.डी.जाडेजा को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.किरण बहन।

वनीपार्क, जयपुर। ए.सी.पी. सुमित गुप्ता को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.लक्ष्मी बहन।

कांकेर। पुलिस अधीक्षक राहुल भगत को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.रामा बहन।

गांधीनगर, हुबली। साउथ वेस्टर्न रेलवे के जनरल मैनेजर को 'रक्षा-सूत्र' बांधते हुए ब्र.कु.ऊषा बहन एवं ब्र.कु.लता बहन।

कामठी। ब्र.कु.कविता बहन को शॉल एवं सौगात भेंट कर स्वागत करते हुए आहिल्यबाई होल्कर महिला सहकारी पट संस्था की अध्यक्षा एवं उसके सदस्य।